Peer Reviewed/ Refereed Research Journal, Vol. 7, Issue-1 Jan - June - 2021 ISSN 2454-3950

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं के नामांकन, पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम का प्रभावात्मक अध्ययन

डॉ0 शालिनी त्यागी
एसोसिएट प्रोफेसर
मेरठ कॉलिज, मेरठ (उ.प्र.)

ओम कुमार
शोधार्थी
मेरठ कॉलिज, मेरठ (उ.प्र.)

सारांशिका

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के तहत पिथौरागढ़ जिले ने बालिका शिशु को बचाने और उनकी शिक्षा के विभिन्न उपाय किए हैं। जिला कार्यबल और ब्लॉक कार्यबल गठित किए गए हैं। इन संगठनों की बैठकें आयोजित की गई हैं और शिशु लिंग अनुपात से संबंधित स्पष्ट रूपरेखा तैयार कर ली गई है। बड़े स्तर पर समुदाय के लोगों से संपर्क करने के लिए और इस योजना का व्यापक रूप से प्रचार करने के लिए जागरूकता बढ़ाने से संबंधित कार्यकलाप चलाए जा रहे हैं। विभिन्न स्कूलों, सैनिक स्कूलों तथा सरकारी विभागों कर्मचारियों इत्यादि की प्रमुख भागीदारी से विभिन्न रैलियां आयोजित की गई हैं।

मुख्य शब्दः बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, शिक्षा, स्वतंत्र अस्तित्व, संघर्ष, दृष्टकोण

प्रस्तावना—हम सभी जानते हैं कि हमारा भारत देश एक कृषि प्रधान देश है और पुरुष—प्रधान देश है। यहाँ सदियों से स्त्रियों के साथ ज्यादतियां होते आई है। जब ईश्वर होकर माता सीता इस कुप्रथा से नहीं बच पायी, फिर हम तो मामूली इंसान है, हमारी क्या औकात।

ये पुरुष—प्रधान समाज लड़कियों को जीने नहीं देना चाहता। मुझे समझ नही आता, मैं इन मर्दो की सोच पर हँसु या क्रोधित होऊ। ये जानते हुए भी कि उनका अस्तित्व भी एक महिला के कारण ही है, फिर भी ये पुरुष समाज केवल पुत्र की ही कामना करता है। और अपने इस पागल—पन में न जाने कितनी लड़कियों का जीवन नष्ट किया है। शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा मनुष्य को ऐसा परिवेश प्रदान करती है जहां व्यक्ति का निरंतर सर्वोतोन्मुखी विकास होता है। छात्र के सर्वतोन्मुखी विकास के उत्तरदायित्व में शिक्षक की अहम भूमिका है। जिसके फलस्वरूप शिक्षण संस्थानों का उत्तरदायित्व है कि वह अध्यापकों को सुनियोजित एवं सुगठित प्रशिक्षण प्रदान करें जिससे वह भी अपने छात्रो के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे। शैक्षिक उपलब्धि मनुष्य के सर्वांगीण विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है।

आजादी के बाद भारतीय शिक्षा में सुधार व स्तरीकरण हेतु अनेक आयोगो तथा समितियों का नये स्तर पर गठन किया गया। अनेक आयोगो तथा समितियों ने शिक्षा की समस्याओं की समीक्षा की व राष्ट्रीय नीतियाँ तैयार की। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948—1949, माध्यमिक शिक्षा 1952—53 व शिक्षा आयोग 1964—66 का गठन किया गया। कोठारी आयोग ने 1951—56 के दौरान शिक्षा में हुई प्रगति की समीक्षा की व इसमें सुधार की आवश्यकता स्पष्ट करते हुये अपने सुझाव प्रस्तुत किये। इन सिफारिशों और प्रयासों के आधार पर 1968 में एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्वीकार की गयी। सभी स्तरों पर शैक्षिक सुविधाओं का प्रसार शुरू हुआ व शिक्षा को मनोवैज्ञानिक आधार पर केन्द्रित करने का कार्य आरम्भ हुआ। क्योंकि बालक का व्यक्तित्व प्राकृतिक व भौतिक वातावरण का समावेश होता है अतः वर्तमान में मनौवैज्ञानिकों ने बालक के असीम जिज्ञासा भरे औजस्वी मस्तिष्क को संतृप्त और विकसित करने हेतु स्वस्थ व शैक्षिक पारिवारिक, सामाजिक वातावरण को आवश्यक माना है।

आज का युग आधुनिक तथा अति प्रतिस्पर्धात्मक है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति के पास गुणों तथा योग्यताओं का असीमित भंडार है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में कोई विशेष गुण अथवा प्रतिभा रखता है तथा साथ ही यह सर्वविदित है, कि विश्व में प्रत्येक व्यक्ति बौद्धिक व्यक्तित्व तथा मनोवैज्ञानिक गुणों में एक दूसरे से भिन्न होता हे। यह योग्यताएं तथा गुण मानव संसाधन के रूप में किसी न किसी तरह से समाज में पहुँचती है तथा उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिकायें निभाती है। प्रत्येक व्यक्ति एक स्वतंत्र अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है, जिसमें छात्र जीवन सर्वाधिक गतिशील रहता है।

व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं व गुणों के संबंध में उसी अभिवृत्ति निर्णयों व मूल्यों का योग आत्म प्रत्यय कहलाता है। छात्र जीवन में आत्म संप्रत्यय महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जो उसकी बहुत सी क्षमताओं का निर्धारण करता है तथा व्यक्तितव का निर्माण होता है। बालक के आत्म संप्रत्यय कें विकास में विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हे। सामान्यतः बालक और बालिकाओं के आत्म संप्रत्यय में अंतर पाया जाता है लिंगानुसार भूमिकाओ का प्रभाव आत्म संप्रत्यय पर देखा जा सकता है सामान्यतः उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले बालक—बालिकाओं का आत्म संप्रत्यय उच्च होता है। धर्म और सामाजिक वर्ग का प्रभाव आत्म संप्रत्यय पर पड़ता है। संस्कृति की विभिन्नताओ का प्रभाव आत्म संप्रत्यय पर देख जा सकता है, (धवन एवं नायडू, 1995)। व्यक्तियों में आत्म — स्वीकृति अधिकता व्यक्तिगत समायोजन शीलता को मजबूती प्रदान करती हे (मेरिस, 1958)। जीवन के प्रारभिंक वर्षो में आत्म संप्रत्यय अस्थिर देखी जा सकती परंतु आयु बढ ने के साथ — साथ उसमें स्थिरता आती है आत्म संप्रत्यय मे अस्थिरता, विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन मे दुर्बलता प्रदान करती है। व्यक्ति के आत्म संप्रत्यय की शुद्धता (।बबनतंबल) उसके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन को सार्थक रुप से प्रभावित करती है। आत्म संप्रत्यय व्यक्ति के विचारों और अनुभव से परिवर्तित

होते रहते है, अतः आत्म संप्रत्यय भी परिवर्तित होता रहता है जब व्यक्ति की उपलब्धि और उसके लक्ष्य में अंतर अधिक होता है तब उसका आत्म संप्रत्यय ऋणात्मक रूप से प्रभावित होता है। व्यक्ति जितना ही कम आक्रामक होता है, उसका आत्म संप्रत्यय उतना ही अधिक उच्च होता है।

किशोरों के आत्म संप्रत्यय को कुण्ठा तथा कुण्ठा कें विभिन्न मोड्स महत्वपूर्ण शिक्षा मनुष्य के जीवनपर्यंत चलने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा कोई समाज अपने सदस्यों को अपनी पूर्व संचित सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराता है और उन्हें इस योग्य बनाता है कि वे अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरंतर विकास कर सकें। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है। इसके माध्यम से विद्यालयों में ज्ञान कला कौशल तथा अच्छे व्यवहार का विकास किया जाता है। शिक्षा मानव की अमूल्य वस्तु है। शिक्षा समाज और मानव की आत्मा है तथा उसके विकास में सहायक है। यदि समाज मानव का दर्पण है तो मानव शिक्षा का दर्पण है। अर्थात मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने जीवन में जो वृद्धि करता है जिन जिन पहलुओं का विकास करता है वह सब शिक्षा से संभव है। शिक्षा मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। मनुष्य अपने जन्म के बाद से ही शिक्षा ग्रहण करना प्रारंभ कर देता है और शिक्षा की यह प्रक्रिया चलती रहती हैं। प्रारंभ में शिक्षा प्रदान करने का कार्य घर – परिवार एवं समुदाय कहते हैं। तत्पश्चात व्यक्ति औपचारिक साधनों जैसे विद्यालय, महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करता है। प्रारंभ में जहां शिक्षा द्वारा बालक अपने गुरु से ज्ञान एवं सूचनाएं प्राप्त करता था, वहीं आज शिक्षा का अर्थ काफी व्यापक हो गया है। शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा मनुष्य को ऐसा परिवेश प्रदान करती है जहां व्यक्ति का निरंतर सर्वतोन्मुखी विकास होता है।

छात्र के सर्वतोन्मुखी विकास के उत्तरदायित्व में शिक्षक की अहम भूमिका है। जिसके फलस्वरूप शिक्षण संस्थानों का उत्तरदायित्व है कि वह अध्यापकों को सुनियोजित एवं सुगठित प्रशिक्षण प्रदान करें जिससे वह भी अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे भारत में शिक्षक शिक्षा बहुत ही उपेक्षित रही यद्यपि इसका सीधा संबंध शिक्षा की गुणवत्ता से होता है। देश की वांछित प्रगति के लिए शिक्षक शिक्षा में समुचित सुधार लाना आवश्यक होता है। बच्चे के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बच्चे में व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं। यह देखा गया है कि एक ही विषय में एक जैसा अध्यापकों से शिक्षा ग्रहण करते हुए भी बालकों की स्तरें में विभिन्नता पायी गयी है।

अधिगम के सैद्धांतिक रूप से स्पष्ट है कि बालक अपनी रूचि के अनुसार ही शिक्षण ग्रहण करता है। यह बात स्पष्ट है कि प्रभावी अधिगम बच्चे की रूचियों के विरूद्ध नहीं किया जा सकता है। लेकिन शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अन्य कारक भी हैं जैसे सामान्य तथा विशेष योग्यता, अध्ययन के क्षेत्र में रूचि, उसकी अध्ययन संबंधी आदतें, घरेलू तथा विद्यालय आदि का वातावरण तथा आर्थिक परिस्थितियां आदि। शैक्षिक उपलब्धि मनुष्य के सर्वांगीण विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अनेक कारक है परंतु शोधकर्ता के विचार में सबसे प्रभावी कारक बच्चे की रूचि है जो वह किसी अधिगम क्षेत्र में रखता है। रूचि – सीखने – सिखाने की प्रक्रिया को संचालित करने वाली कौंय शक्ति है एवं रूचि बच्चों को केवल सीखने में ही सहायता प्रदान नहीं करती बल्कि उनके दृिष्टकोणों प्रवृत्तियों तथा अन्य व्यक्तित्व संबंधित विशेषताओं के निर्माण में सहायक होती है। यह छात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण को दिशा निर्देशित करता है।?

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान

देश में लगातार घटती कन्या शिशु–दर को संतुलित करने के लिए इस योजना की शुरुआत की गयी। किसी भी देश के लिए मानवीय संसाधन के रुप में स्त्री और पुरुष दोनों एक समान रुप से महत्वपूर्ण होते है। केवल लड़का पाने की इच्छा ने देश में ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है, कि इस तरह के योजना को चलाने की जरुरत आन पड़ी। यह अत्यंत शर्मनाक है।

यद्यपि स्त्रियों के साथ भेदभाव समूल विश्व में होता है। यह कुछ नया नहीं है। आज भी समान कार्य के लिए लड़कियों को अपेक्षाकृत कम वेतन दिए जाते है। कहीं अधिक काबिल होने के बाद भी।

हमारा मंत्र होना चाहिएः बेटा–बेटी एक समान

"आइए कन्या के जन्म का उत्सव मनाएं। हमें अपनी बेटियों पर बेटों की तरह ही गर्व होना चाहिए। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि अपनी बेटी के जन्मोत्सव पर आप पांच पेड़ लगाएं।" – प्रधान मंत्री ने अपने गोद लिए गांव जयपुर के नागरिकों से बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की शुरूआत प्रधानमंत्री ने 22 जनवरी 2015 को पानीपत, हरियाणा में की थी। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना से पूरे जीवन–काल में शिशु लिंग अनुपात में कमी को रोकने में मदद मिलती है और महिलाओं के सशक्तीकरण से जुड़े मुद्दों का समाधान होता है। यह योजना तीन मंत्रालयों द्वारा कार्यान्वित की जा रही है अर्थात महिला और बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन मंत्रालय।

इस योजना के मुख्य घटकों में शामिल हैं प्रथम चरण में PC तथा PNDT Act को लागू करना, राष्ट्रव्यापी जागरूकता और प्रचार अभियान चलाना तथा चुने गए 100 जिलों (जहां शिशु लिंग अनुपात कम है) में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित कार्य करना। बुनियादी स्तर पर लोगों को प्रशिक्षण देकर, संवेदनशील और जागरूक बनाकर तथा सामुदायिक एकजुटता के माध्यम से उनकी सोच को बदलने पर जोर दिया जा रहा है।

एनडीए सरकार कन्या शिशु के प्रति समाज के नजरिए में परिवर्तनकारी बदलाव लाने का प्रयास कर रही है। प्रधान मंत्री मोदी ने अपने मन की बात में हरियाणा के बीबीपुर के एक सरपंच की तारीफ की जिसने Selfie With Daughter पहल की शुरूआत की। प्रधानमंत्री ने लोगों से बेटियों के साथ अपनी सेल्फी भेजने का अनुरोध भी किया और जल्द ही यह विश्व भर में हिट हो गया। भारत और दुनिया के कई देशों के लोगों ने बेटियों के साथ अपनी सेल्फी भेजी और यह उन सबके लिए एक गर्व का अवसर बन गया जिनकी बेटियां हैं।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की शुरूआत के बाद से लगभग सभी राज्यों में Multi & Sectoral District Action Plans चलाए जा रहे हैं। जिला स्तर के कर्मचारियों तथा frontline workers की क्षमता को और बढ़ाने के लिए प्रशिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रमचलाए जा रहे हैं और उन्हें प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अप्रैल से अक्टूबर 2015 तक इस तरह के नौ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं जिसमें सभी राज्यों–संघ राज्य क्षेत्रों के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को शामिल किया गया।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के तहत पिथौरागढ़ जिले ने बालिका शिशु को बचाने और उनकी शिक्षा के विभिन्न उपाय किए हैं। जिला कार्यबल और ब्लॉक कार्यबल गठित किए गए हैं। इन संगठनों की बैठकें आयोजित की गई हैं और शिशु लिंग अनुपात से संबंधित स्पष्ट रूपरेखा तैयार कर ली गई है। बड़े स्तर पर समुदाय के लोगों से संपर्क करने के लिए और इस योजना का व्यापक रूप से प्रचार करने के लिए जागरूकता बढ़ाने से संबंधित कार्यकिलाप चलाए जा रहे हैं। विभिन्न स्कूलों, सैनिक स्कूलों तथा सरकारी विभागों कर्मचारियों इत्यादि की प्रमुख भागीदारी से विभिन्न रैलियां आयोजित की गई हैं।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से पिथौरागढ़ में नुक्कड नाटक भी आयोजित किए जा रहे हैं। ये नुक्कड नाटक केवल गांव में ही नहीं बल्कि बाजारों में भी आयोजित किए जाते हैं ताकि दर्शकों के एक बड़े वर्ग को जागरूक बनाया जा सके। कहानियों के मंचन के माध्यम से लिंग आधारित गर्भपात की समस्या के प्रति लोगों को जागरूक बनाया जा रहा है। शिशु बालिका से संबंधित मुद्दों तथा उसे अपने जीवन काल में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उन्हें इन नुक्कड नाटकों में बहुत अच्छी तरह से दिखाया जाता है। हस्ताक्षर अभियान, संकल्प और शपथ समारोह के माध्यम से स्नातकोत्तर महाविद्यालयों के 700 विद्यार्थियों और अनेक सैन्य कर्मियों तक बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का संदेश पहुंचा है।

पंजाब के मानसा जिले ने एक पहल शुरू की है जिसमें वह जिले के लोगों को अपनी लड़कियों को पढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं। 'उडान – सपने दी दुनिया दे रूबरू

(उड़ान – एक दिन के लिए अपने सपने को जिएं)' योजना, के तहत मानसा प्रशासन छठी से बारहवीं कक्षाओं की छात्राओं से प्रस्ताव आमंत्रित करता है। इन छात्राओं को उस प्रोफेशनल के साथ एक दिन बिताने का अवसर मिलता है जो वे अपने जीवन मेंबनना चाहते हैं जैसे – डॉक्टर, पुलिस अधिकारी, इंजीनियर, आईएएस और पीपीएस

अधिकारी और अन्य।

इस पहल काफी लोकप्रिय हुई है और 70 से अधिक छात्राओं को प्रोफेशनल के साथ

एक दिन बिताने का अवसर पहले ही मिल चुका है जिसमें वे एक पेशेवर वातावरण में उन्हें कार्य करते हुए देखते हैं जिससे उन्हें अपने भावी करियर का चयन करने के बारे में सही निर्णय लेने में मदद मिलती है।

सारणी–1: शहरी किशोरों व किशारियों की शैक्षिक स्तर में कोई सार्थक अंतर नंही है

लिगं	मदोकी संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोर (शहरी)	50	6.5	3.94	2.60	0.05
किशोरियां (शहरी)	50	5.00	4.09		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य 2.60 है जो 0.05 पर सार्थक है। शहरी किशोरों का मध्यमान 6.5 और शहरी किशोरियों का मध्यमान 5. 00 है जो कि शहरी किशोरों के मध्यमान से कम है। अतः शहरी किशोरों में शैक्षिक

रूचि शहरी किशोरियों की तुलना में अधिक है। इनकी शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है। समूचित समीकरण या अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि किशोरों की शैक्षिक रूचि किशोरियों की तुलना में तकनीकी शिक्षा में अधिक है। परतुं वर्तमान समय से लड़कियों ने भी तकनीकी विषयो की पढ़ाई पर जोर देना प्रारंभ कर दिया है और वह इस विषय को पसंद करने लगी हैं। परतुं फिर भी देखने से पता चलता है कि तकनीकी शिक्षा में लड़कों के द्वारा ज्यादा रूझान देखने को मिलता है। किशोर–किशोरियों की स्तरें में पर्याप्त अंतर है। अतः परिकल्पना असत्य प्रतीत होती है।

सारणी–2: ग्रामीण किशोर व किशोरियों की शैक्षिक स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

लिगं	मदोंकी संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोर (ग्रामीण)	50	5.06	2.46	0.56	0.05
किशोरियां (ग्रामीण)	50	5०85	1.85		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य .56 है जो 0.05 पर सार्थक है। ग्रामीण किशोरियों का मध्यमान ग्रामीण 5.85 है और ग्रामीण किशोरों का मध्यमान 5.06 जो कि ग्रामीण किशोरियों के मध्यमान से कम है। अतः ग्रामीण किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है।

सारणी–3: शहरी किशोर ग्रामीण किशोरों की शैक्षिक स्तर में कोई अंतर नहीं है।

लिगं	मदोकी संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोर (शहरी)	50	6.5	3.94	2.50	0.05
किशोर (ग्रामीण)	50	5.06	2.46		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य 2.50 है जो 0.05 पर सार्थक है। शहरी किशोरों का मध्यमान 6.5 और ग्रामीण किशोरों का मध्यमान 5.06 है जों कि शहरी किशोरों के मध्यमान से कम है। अतः शहरी किशोरो में शैक्षिक रूचि की तुलना में समूचित समीकरण या अध्ययन करनें से स्पष्ट होता है कि शहरी किशोरोंकी शैक्षिक रूचि ग्रामीण किशोरों की तुलना में तकनीकी शिक्षा में अधिक है। शहरी किशोर ग्रामीण किशोरों की रूचियों मे पर्याप्त अंतर है। अतः परिकल्पना असत्य प्रतीत होती है। अधिक है। इनकी शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है।

निष्कर्ष–लड़कियों के साथ शोषण होने के पीछे मुख्य कारण अशिक्षा भी है। अगर हम पढ़े–लिखे शिक्षित होते हैं तो हमें सही–गलत का ज्ञान होता है। जब बेटियां अपने पैर पर खड़ी होंगी तो कोई भी उन्हें बोझ नहीं समझेगा।

इसीलिए 'बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम' के माध्यम से बेटियों को अधिक से अधिक शिक्षित बनाने पर जोर दिया जा रहा है। शिक्षित लोगों के साथ कुछ भी गलत करना आसान नहीं होता। लड़की पढ़ी–लिखी होगी तो न अपने साथ कुछ गलत होने देगी और न ही किसी और के साथ होते देखेगी। इसीलिए लड़की का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची

- ''संग्रहीत प्रति'' (पीडीएफ)। 5 नवंबर 2014 को मूल (पीडीएफ) से संग्रहीत। 5 नवंबर 2014 को लिया गया।
- के संदीप कुमार, राजीव मलिक (19 मई 2017)। ''बेटी बचाओ बेटी पढाओ
- योजना धोखाधड़ी पर यूपी सरकार सतर्क'' हिंदुस्तान टाइम्स। 12 जून 2017 को लिया गया।
- प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (28 मार्च 2017)। ''हरियाणा सरकार ने बेटी बचाओ–बेटी पढाओ योजना के तहत धोखाधड़ी के खिलाफ लोगों को सावधान किया''। इंडियन एक्सप्रेस। 12 जून 2017 को लिया गया।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' पर विचार आमंत्रित किए। डीएनए इंडिया। 11 अक्टूबर 2014। 12 जून 2016 को लिया गया।
- ''प्रधानमंत्री हरियाणा से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम शुरू करेंगे''।
- Newindianexpress.com12 जून 2016 को लिया गया।